पंचम अध्याय

उपसंहार

पंचम अध्याय

उ प सं हा र

जिस समय उपन्यास जगतमें मुंशी प्रेमचंदजीका सम्राटत्व छाया था, उसी समय उपन्यासके साहित्याकाशमें जैनेंद्रजीका आगमन हुआ. कल्पनालोकमें घुमानेवाली, ऐय्यारी जासूसी और मनोरंजन प्रधान परिपाटीको छोडकर प्रेमचंदने अपने उपन्यासोंमें पात्रोंके व्यावहारिक जगतका चित्रण किया. जैनेंद्रकुमारने पात्रोंके अंतरंगमें प्रवेश पाया. अचेतन स्थितिकी भावनाओंको उद्घाटित करनेका उन्होंने सफलतम प्रयास किया. उनके पात्र बहिर्जगतकी अपेक्षा अंतर्जगतमें अधिक जीते है. व्यक्तिकी अंतरात्माकी खोज जैनेंद्रने की है. आत्माभिमान, एकाकीपन, कामुकता, घृणा, अधिकार भावना, भूख ,वात्सल्य,आमोद, आत्महीनता आदिका खुलकर विश्लेषण जैनेंद्रजीने अपने उपन्यासोंमें किया है. इन सभी स्थितियोंका चित्रण करते वक्त जैनेंद्रने पात्रोंके अंतर्द्वंदको अधिक महत्व दिया है. कभी-कभी ने भूलको स्वीकार न करनेवाले मनो व्यथामें निमग्न पात्र आत्मपीडामें जीते हैं और कभी आत्मभिमान भी अंतर्द्वंदको निर्माण करनेमें सहायक बन जाता है. मूलप्रवृत्तियोंका यथास्थान विश्लेषण करते हुये जैनेंद्रने अंतर्जगतके विभिन्न तत्वोंका निरूपण भी मनोवैज्ञानिक ढंगसे किया है. जैनेंद्रजीद्वारा उपन्यास जगतमें प्रवेश करनेके पहलेही व्यक्तिवादी चेतनाका समारंभ उपन्यास क्षेत्रमें हुआ था. लेकिन जैनेंद्रजीने, घटनाओंकी अपेक्षा पात्रकी सामान्य गतिविधियोंको अधिक महत्व दिया., व्यक्ति, व्यक्तिका अहंकार और अभिमान उनके उपन्यासोंमें प्रमुख रहा है.

फ्रायडवाद और अस्तित्ववादद्वारा भारतीय जीवन दर्शनपर प्रभाव डालनेके परिणामस्वरूप उपन्यासके अंतर्गत, समाजके स्थानपर व्यक्तिको अधिक महत्व मिला. जैनेंद्रने इस विचार चिंतनको उठाया है.

सामाजिक समस्याओंके निरूपणके बदले उन्होंने व्यक्तिगत उलझनोंका ही अधिक विश्लेषण किया है. उपन्यासोंका प्रत्येक पात्र स्वतंत्र है और उसकी अपनी निजी समस्या है. अर्थात इन व्यक्तिगत पात्रोंके साथ कुछ वर्गगत पात्र भी उनके उपन्यासोंमें पाये जाते हैं. समष्टिकी अपेक्षा यहां व्यष्टिका चित्रण अधिक सूक्ष्मतासे हुआ है. जैनेंद्रके नारी पात्रोंके समान उनके पुरुष पात्र भी वैचारिक और व्यक्तिगत समस्याओंमें उलझे हुये हैं. इन उलझी हुयी परिस्थितियोंका विवरण प्रस्तुत करना जैनेंद्रका लक्ष्य रहा है. मनोविश्लेषणात्मक शैलीके साथ दार्शनिकताके अद्भुत मिश्रणके कारण उनके उपन्यासोंको एक नया आचरण प्राप्त हुआ है. इन उपन्यासोंके पुरुष पात्र भी भीतरी द्वंद्वात्मक स्थितिमें फँसे हुये हैं. समस्याओंके प्रति उनके मनमें उद्वेग और विद्रोह रहनेपर अहिंसाकी छाप अधिक रहनेसे ये पात्र आत्मपीडामें जी रहे हैं. दूसरोंके सौख्यके लिए आंतरिक दर्दको अनिच्छासे भुगत रहे हैं.

बीसवीं शताब्दीके तीसरे दशकमें जैनेंद्रजीका आविर्भाव हुआ. उस समय भारतीय स्वातंत्र्य प्राप्तिकी लालसा भारतीय युवकोंके मनमें निर्माण हुयी थी. गांधीजीके अहिंसावादी तत्वोंका पालन किया जा रहा था. इस पृष्ठभूमिका प्रभाव जैनेंद्रके विचारोंपर रहा है. जैनेंद्रके पात्रोंके मनमें जब-जब समाज और रूढ-मान्यताओं के विरुद्ध विद्रोह निर्माण होता है, तब वे प्रत्याघात करनेकी अपेक्षा स्वोत्पीडन का सहारा लेते हैं. जितेन (विवर्त), जयंत (व्यतीत) जयवर्धन (जयवर्धन) आदिने विद्रोह वृत्तिको धारण करनेके उपरांत दूसरोंपर चोट नहीं की है. बल्कि अपने आपको जलाया, सुलगाया है. निरंतर परिताप ग्रहण किया है.

जैनेंद्रजीके प्रारंभिक उपन्यासों (सुनीता, कल्याणी, सुखदा आदि) में क्रांतिकारी पात्र रहे हैं. जो अपने दोस्तोंके घरमें आश्रय पाते हैं. जैनेंद्रकी नारियाँ भी घरकी चहार दीवारियोंमें बंद नहीं

रही हैं. वे बाहर आयी हैं. और क्रांतिकारियोंकी सहायता कर रही हैं. पर्दा प्रथा यहां नहीं रही. पतियोंके साथ साथ पत्नियोंमें भी सामाजिक कार्य करनेकी स्पृहा जागृत हुयी और अपना अहंकार जागृत होनेसे वे स्वाभिमानी बनी है. पति पात्रोंको भी यह परिवर्तन प्रिय है. क्योंकि अधिकतर वे कुंठाओंसे ग्रस्त हुये हैं. घरमें बाहरका प्रवेश उन्हें प्रिय रहा है.

जैनेंद्रके हर पात्रोंका ढंग विचित्रताको ढोता है. किसी स्त्री के चरित्रपर पहले कीचड उछालकर बादमें उसका स्वीकार करनेवाला - डा. असरानी विचित्र पात्र है. श्रीकांत (सुनीता),कांतस्वामी(सुखदा) नरेश (विवर्त), राजकुमार (अनामस्वामी) ये पतिपात्र स्वयं अपनी पत्नियोंको दूसरोंकी ओर धकेल रहे हैं. कुछ पति-पात्र निजी कमी के कारण ऐसा कर रहे हैं, तो कुछ पत्नीको प्रसन्नता एवं सुख पहुँचाने के लिए कर रहे हैं.

"परख" से लेकर " अनामस्वामी" तकके औपन्यासिक कृतियोंके पात्र आधुनिक युगके पात्र रहे हैं. उनमें गहन अंतर्द्वंदके साथ जगत्का व्यापक अनुभव प्राप्त करनेकी होड लगी है. आधुनिकतामें जीनेके कारण पति-पत्नीके संबंधोंमें भी शिथिलता आयी है. आज न पत्नी पतिको देवता मानती है और न पति पत्नीको देवी. काम तृप्तिमें बाधाका अनुभव इन पात्रोंको असह्य हो रहा है. इस अवस्थापर जैनेंद्रके बुर्जुआ पति पात्रोंने भी दुर्लक्ष किया है. रायसाहब (विवर्त),पी.दयाल (अनामस्वामी),संपादक महोदय (व्यतीत) आदि पात्रोंने प्रेमका महत्व स्वीकृत करके अपनी संतानोंको सामाजिक नियमोंका उल्लंघन करनेकी खुली छूट ही प्रदान की है. कल्याणी और प्रीमियर(कल्याणी),सुखदा

और लाल (सुखदा), भुवनमोहिनी और जितेन (विवर्त), मी अनिता और जयंत (व्यतीत) इन प्रेमी-प्रेमिकाओंकी जोडियोंमें शुध्द वासनापूर्तिका आधार रहा है. क्योंकि इन स्त्रियोंका विवाहही कुछ कारणोंसे अन्योंसे हुआ है. सहाय और नीलिमा (मुक्तिबोध),वसुंधरा और शंकर उपाध्याय (अनामस्वामी),मृणाल और शीलाका भाई (त्यागपत्र) इस कोटिकेही पात्र रहे हैं. उपर्युक्त स्त्री और पुरुष पात्रोंमें "प्रेमी-प्रेमिका" के संबंध रहे हैं." जैनेंद्रजीकी नायिकाओंके प्रेमी और पति एक न होकर अलग-अलग दो पुरुष होते हैं. जिनसे उनका प्रेम हो जाता है, उनसे विवाह नहीं हो पाता और जिन से विवाह हो जात है, उन्हें वे मनसा-वाचा-कर्मणा समर्पित नहीं हो पाती..... यदि कोई और पात्र होता तो ऐसी अपवाद जनक स्थितिमें या तो अपने जीवन साथीको मार देता या स्वयं मर जाता,ह नहीं तो पागलखानेमें जरूर होता. पर जैनेंद्रजीके पात्रोंके साथ ऐसा कुछ भी नहीं होता."[१] जैनेंद्रजीके उपन्यासोंके "पति-पत्नी" पात्र भलेही असलियतमें पति -पत्नी रहे हैं, बल्कि "पति-पत्नी" की रिश्तेकी दीवार उन्होंने पार की है. उनका संबंध अन्योंसे प्रस्थापित हुआ है. इस रिश्तेकी जड कामवासना रही है. परिणामत: एकही बिछौनेपर सोकर भी वे एक दूसरेसे अनेकों मील दूर रहे हैं. उच्छृंखलता एवं उन्मुक्तताके कारणाही अपरा (अनंतर), उदिता (अनामस्वामी),नीलिमा (मुक्ति बोध) दूसरोंके लिए जीती हैं.

फ्रायडीय विज्ञानका साहित्यमें प्रवेश होनेसे प्राचीन मान्यताओंकी मजबूत दीवारें ढह गयी हैं. मनोविज्ञानकारोंने भी यह सिध्द कर दिया है कि स्त्री और पुरुषमें " नारी-नर" के सिवा दूसरा कोई रिश्ता नहीं

---

१. हिंदी उपन्यासमें चरित्रचित्रणका विकास - रणवीर रांग्रा
संस्करण १९६१ पृ. ३६२.

होता. जो होता है - वह नकली रहता है. त्रिकोणात्मक प्रेमकी निर्मिती करके जैनेंद्रने शैशवीय-दमित-कामवृत्तिका भी चित्रण किया है. मृणाल (त्यागपत्र), जयंत (व्यतीत), उदिता (अनामस्वामी) शैशव अवस्थामें ही कामग्रस्त बनते हैं. यौन-विपर्यस्तताओंकी भावनाओंसे ग्रस्त होनेके कारण श्रीकांत (सुनीता) असामान्य बन गये हैं. परिणामत: जैनेंद्रके पुरुष-पात्र निरीह और बेचारे होकर भी हमारा हृदय मोहित करते हैं. पति-पात्रोंकी पत्नियाँ मानसिक यातनाओंके कुंडमें तिल-तिल कर जल रही हैं. पति स्वयं ही उनके और उनके प्रेमियोंसे अलग हट जाते हैं. उनका मार्ग प्रशस्त करते हैं. लेकिन पति नपुंसक होकर भी स्त्रियाँ पुन: पुन: समर्पण कर रही है. क्योंकी " पतियोंसे आश्वासन पाकर भी जैनेंद्रकी नायिकाएँ आश्वस्त नहीं हो पाती. पातिव्रत धर्मके परंपरागत संस्कार उनके अचेतन मनमें इतने गहरे धँसे हैं कि वे पतिके प्रति उदासीन होनेके विचार-मात्रसे अपने को भीतर ही भीतर अपराधी पाती हैं. और अपनेको पतिसे तोडकर एकमद अलग नहीं कर पाती."[१]

पति-पात्रोंका अपनी पत्नियोंके प्रति अगाध प्रेम है. उनका चरित्र चित्रण करते समय जैनेंद्रने नाटकीय विधियोंका अधिक प्रयोग किया है. इन पात्रोंके व्यावहारिक औचित्यको लेकर अनेक आशंकाएँ उठायी जा सकती हैं. अंतर्विरोध, रहस्ययमता और दार्शनिकताके कारण ये पात्र अव्यावहारिक और अबूझसे लगते हैं.

पति-पात्रोंके अंतर्गत विलयर शेल्डन हुस्टन (जयवर्धन) यह एकमात्र विदेशी पात्र ऐसा रहा है कि जिसने चार विवाह करके तलाक भी दिये हैं. उदिताके (अनामस्वामी) पति भी इस कोटिके अंतर्गत आते हैं.

---

१. हिंदी उपन्यासमें चरित्र -चित्रणका विकास - रणवीर रांग्रा - संस्करण १९६१ पृ. ३६३.

उदिता दो - बार अपने मित्रों के साथ रहती हैं. बच्चेको शिशुगृहमें भेजती है और तीसरा प्रेम सफल होनेपर विवाह करती हैं. लेकिन अंतमें उसने भी तलाक दिया हैं. नीलिमाका पति दरबाबू (मुक्तिबोध) अलग कोटिका पात्र हैं. जो पत्नीके क्रिया कलापोंपर ध्यान नहीं देता.

राजकुमार (अनामस्वामी) को छोडकर किसी भी दंपतिके मनमें संतानके प्रति अब सतर्कता नहीं हैं. पति-पत्नी, प्रेमी-प्रेमिका, पतिका मित्र और पत्नी आदि एक दूसरेसे मिलते हैं, लेकिन संतानके बारेमें कुछ विचार विमर्श नहीं करतें. अर्थात् बहुतसे दंपतियोंके यहाँ बाल बच्चे पैदा हुये हैं, लेकिन पति-पत्नीयोंकी जोडियोंकी संख्या देखकर यह कहाँ जा सकता हैं कि इनमें संतानके प्रति अस्थी हैं. " परख " उपन्यासमें स्वयं जैनेंद्रने इसके बारेमें संकेत दिया हैं, कि " गरिमा -सत्यका और कट्टो बिहारीका विवाह हो गया हैं. और बहुत कुछ हमारा खत्म हो गया हैं. इक्कीसवीं सदीके अनुसार हम संतानके शौकीन नहीं हैं, इसलिए उस बात तक कहनेके लिए ठहरेंगे नहीं."[१] शायद इस कारण ही शंकर उपाध्याय (अनामस्वामी) अपनी पत्नीको जहरकी सुईसे खत्म कर देता हैं.

पति पात्रोंमें अनोखे और अलग ढंगका पात्र जयवर्धन (जयवर्धन) हैं. जो "इला" के साथ युवावस्थासेही रहता आया हैं. काफी समय और अनेक वर्ष बीत जानेके उपरांत उससे शादी करता हैं. उसकी शादी होनेके उपरांत उपन्यास समाप्त हुआ हैं. परिणामतः उसकी शादीके उपरांतका जीवन पानेकी लालसा उपन्यासके बृहत् कलेवरको देखकर जागृत होती हैं.

औपन्यासिक कृतियोंके अधिकांश पति पात्र संपन्न रहे हैं. धन और वैभवकी उनके पास कमी नहीं हैं. पतियोंमें पुरुषोचित ईर्ष्याका

---

१) परख - जैनेंद्रकुमार संस्करण १९८४ पृ. ११०

२) ~~जैनेंद्रके उपन्यासोंका शिल्प - ओम् प्रकाश शर्मा~~

~~प्रथम संस्करण १९७५ पृ. ७९~~

अभाव हैं. जयंत कश्मीरकी सुषमामें भी नवपरिणीताकी प्रणय याचनाके प्रति आकर्षित नहीं होता हैं. सुनीता भी एक ओर पातिव्रत्यका दम भरती हैं और दूसरी ओर हरिप्रसन्नके सम्मुख निर्वस्त्र होती हैं."[1] इन स्थितियोंका पता पतियोंको रहता हैं फिर भी वे अपने आपको संतुष्ट रखते हैं. नाराजगी व्यक्त नहीं करते. पति-पात्रोंमेंसे अनेक पात्रोंके सामने रोजी - रोटीकी समस्या नहीं हैं. वे सुशिक्षित, सुरुचिपूर्ण, कलाप्रेमी और प्रतिष्ठाप्राप्त नागरिक हैं. भाग्यको वे अधिक मानते हैं. ईश्वरीय सत्तापर भरोसा रखते हैं.

पति - पत्नी संबंधोंमें और उनके कार्यव्यापारोंमें घरके नौकर चाकर केवल दर्शक रहे हैं. जैनेंद्रजीने पति पात्रोंका निर्माण करते समय अहिंसावादी दार्शनिक सिध्दांतोंका पालन किया हैं. वे आध्यात्मिक प्रेमसे प्रेरित होकर अपने हृदयमें वेदनाका विस्तार और करुणाकी गहनताको समेटे हुये हैं.

---

१ - जैनेंद्रके उपन्यासोंका शिल्प
ओमप्रकाश शर्मा
प्रथम संस्करण १९७५ पृ. ७९